CHAPTER 23

HINDI

Doctoral Theses

238. इन्दू कुमारी
अमरकांत के कथा-साहित्य में निहित विश्व-दृष्टि ।
निर्देशक : प्रों. अजय तिवारी
Th 16700

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में विश्वदृष्टि का तात्पर्य या आशय को स्पष्ट करते हुए यह दिखाने की कोशिश की गयी है कि आखिर इसका स्वरूपगत आधार क्या है ? इस प्रश्न के समाधान को ढूंढने के लिए पश्चिमी चिंतकों एवं सामाजशास्त्रियों के विचार प्रस्तुत किए गए हैं । विश्वदृष्टि और विचारधारा में अंतर और साम्यता पर प्रकाश डालते हुए यह दिखाया गया है कि कोई भी साहित्य विश्वदृष्टि से किस रूप में जुड़ा होता है और साहित्य में उसकी उपादेयता क्या है ? इसके अतिरिक्त विभिन्न विचारधाराओं पर विचार करते हुए साहित्य में उसके प्रतिफलन पर भी विचार किया गया है। अमरकांत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की जांच-पडताल करते हुए उनके जीवन-परिचय, जीवन-दृष्टि, रचना-संसार आदि पक्षों को उजागर करते हुए, नई कहानी आंदोलन में उनकी स्थिति पर प्रकाश डाला गया है । रचनाकार द्वारा निर्मित कथानक की संरचना, चरित्रों का निर्माण, पात्रों के जीवन व्यवहार, लेखक की वास्तविकता, लेखक की आकांक्षा जैसे प्रश्नों पर विचार किया गया है । परिवेशगत वास्तविकता से साहित्य के यथार्थ को जोड़कर किस प्रकार की विश्वदृष्टि की अभिव्यक्ति अमरकांत अपने रचना-संसार में करते हैं, इसका विश्लेषण किया गया है ।

विषय सूची

1. विश्वदृष्टिः स्वरूप और पहचान 2. साहित्य और विश्वदृष्टि का अंतः संबंध 3. अमरकांत : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 4. अमरकांत के उपन्यासों में विश्वदृष्टि की

संरचना 5. विश्वदृष्टि के टुकड़े और अमरकांत की कहानियाँ 7. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

239. गुप्ता (उमा)

हिन्दी काव्य में उपनिवेशोत्तर भारत की सत्ता-संरचना की पहचान का अध्ययन ।

निर्देशक : प्रो. सुधीश पचौरी

Th 16699

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में औपनिवेश्किता को उसके सामान्य सिद्धांतों के आधार पर समझने का प्रयास किया गया है । इसी प्रकार उपनिवेशोत्तर के विषय को टटोलने तथा उत्तरऔपनिवेशिक विमर्श पर चर्चा किया गया है । सत्ता की विवेचना के कछ प्रचलित सिद्धांतो पर चर्चा की गई है । वेबर, मार्क्स और फूको समेत कई अन्य सिद्धांतकारों की विवेचना को एक साथ प्रस्तुत कर सत्ता से जुड़े मौलिक प्रश्नों के मूल तक पहुंचने का प्रयास किया गया है । साहित्य और सत्ता के अंतर्सम्बंध को व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है । इस क्रम में साहित्य के कुछ प्रचलित सिद्धांतों को एक साथ प्रस्तुत कर सत्ता के संदर्भ में उन्हें व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है । 1947-80 तक की हिन्दी कविता में सत्ता-संदर्भ का अध्ययन किया गया है । जिसमें मुख्य आधार इस दौर में सत्ता द्वारा पैदा किए गए विमर्श है । प्रस्तुत शोध विषय हिन्दी साहित्य और विशेषतः हिन्दी कविता की विवेचना में एक और आयाम जोड़ने का प्रयास है ।

विषय सूची

1.औपनिवेशिकता, उपनिवेशोत्तरता और उत्तरऔपनिवेशिक विमर्श 2. सत्ता-संरचना का स्वरूप 3. साहित्य और सत्ता का अंतर्सम्बंध 4. 1947-65 तक हिन्दी कविता में सत्ता संरचना की पहचान का अध्ययन 5. 1965-80 तक की हिन्दी कविता में सत्ता संरचना की पहचान का अध्ययन 6. भूमंडलीकरण और उदारीकरण के वर्तमान दौर में सत्ता संरचना की पहचान का अध्ययन 7. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

240. गुप्ता (सरला)

प्रगतिशील विचारधारा और भैरवप्रसाद गुप्त का कथा-साहित्य ।

निर्देशिका : डॉ. सुधा सिंह

Th 16854

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में प्रगतिशील आन्दोलन के वैश्विक और भारतीय परिप्रेक्ष्य को उद्घाटित करते हुए प्रगतिशील साहित्य सम्बन्धी मानदण्डों का विश्लेषण प्रगतिशील हिन्दी साहित्यकारों के साहित्य के संक्षिप्त परिचय में किया गया है । प्रगतिशील लेखक संघ के विविध सम्मेलनों और उनके घोषणा-पत्रों का उल्लेख करते हुए प्र.ले.सं. में वैचारिक भिन्नता से पैदा हुई विघटनकारी स्थितियों का भी वर्णन किया गया है। भैरवप्रसाद गुप्त के उपन्यासों व कहानियों में प्रगतिशील विचारधारा का मूल्यांकन वर्गीय चेतना, आर्थिक आधार, जाति संरचना, साम्प्रदायिकता व स्त्री की सामाजिक स्थिति के आधार पर किया गया है । कथा-साहित्य में कथानक व चरित्र-चित्रण की पद्धतियों व उपयोगिता का उल्लेख करते हुए समाजवादी यथार्थवादी विचारधारा के लेखक भैरवप्रसाद के कथा साहित्य के कथानक उद्देश्य प्रधान चरित्र सम्बन्धी वर्गीय चरित्रों की अवतारणा पद्धति का उल्लेख किया गया है । भैरवप्रसाद गुप्त के कथा-साहित्य की अन्तर्वस्तु व रूप के परस्पर सम्बन्ध का विश्लेषण करते हुए कथानक, कथा का चयन, घटना को बयान करने का तरीका, कथानक और चरित्र का सम्बन्ध, वातावरण भाषा शैली, उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया है ।

विषय सूची

1. प्रगतिशील विचारधारा, स्वरूप, सिद्धान्त और अवधारणा । 2. प्रगतिशील विचारधारा और हिन्दी साहित्य । 3. भैरवप्रसाद गुप्त के कथा साहित्य में प्रगतिशील विचारधारा के तत्व । 4. भैरवप्रसाद गुप्त का रचना संसार और प्रगतिशील विचारधरा का प्रभाव। 5. प्रगतिशील लेखन के 'फॉर्म' की बहस । उपसंहार एवं संदभ्र ग्रन्थ सूची ।

241. चौधरी (उमा शंकर)

दलित विमर्श के वैचारिक आधार और कबीर ।

निर्देशक : डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल

Th 16701

सारांश

यह शोध दलित विमर्शकारों द्वारा की गई कबीर की नई व्याख्या को पाठकेंद्रित कर दलित विमर्श के वैचारिक आधार के बरक्स रखकर देखने की कोशिश है । इसमें वर्ण-व्यवस्था, जाति-व्यवस्था के उद्‌भव के इतिहास से लेकर दलित विमर्श के वैचारिक आधार को तय करते हुए कबीर की आलोचना परम्परा को खंगालने की कोशिश की गई है । वर्ण-व्यवस्था और जाति-प्रथा के उद्‌भव के कारणों को ढूंढने की कोशिश की गई है । जाति प्रथा भारतीय समाज की जितनी बडी सच्चाई है उतनी ही बड़ी सच्चाई यह है कि जाति के उद्‌भव के साथ ही लगभग जाति-प्रथा के विरोध के स्वर भी समाज में मौजूद रहे हैं । इसमें लोकायत, चार्वाक से लेकर जैन, बौद्ध धर्म और भक्ति आन्दोलन से होते हुए ब्रिटिशों के योगदान और स्वाधीनता संग्राम के समय के विभिन्न चिंतकों के व्यक्तिगत प्रयासों का ऐतिहासिक महत्व ढूंढने की कोशिश की गई है । इसमें सवर्णवादी आलोचकों द्वारा कबीर पर लिखी गई आलोचना को देखने का प्रयास किया गया है । दलित आलोचकों की निगाह में कबीर की आलोचना को परखा गया है । समकालीन दलित विमर्श के मुख्य उद्देश्य, मुख्य सिद्धांत और चिंतन के सापेक्ष और समानान्तर कबीर के पाठ को रखकर देखने का प्रयास किया गया है कि क्या वाकई दोनों में सौ फीसदी समतुल्यता है । इसमें कबीर से सम्बन्धित उन किंवदन्तियों पर विचार किया गया है जिसे ब्राह्मणवादी आलोचकों ने गढ़ा था और जिसे डॉ. धर्मवीर ने दलित विमर्श के सहारे उजागर करने की कोशिश की ।

विषय सूची

1. वर्ण व्यवस्था और जाति-प्रथा का उद्‌भव और विकास 2. दलित विमर्श का इतिवृत : दलित चेतना की पहचान के बिन्दु 3. दलित विमर्श के वैचारिक आधार 4. हिन्दी आलोचना में कबीर : सत्ता की राजनीति 5. दलित विमर्श के वैचारिक आधार और कबीर 6. कबीर से सम्बन्धित विवादित बिन्दु 7. उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

242. जैन (नीरू)

समसामयिक नाटकों में महानगरीय बोध।

निर्देशक : डॉ. प्रभात कुमार

<u>Th 16688</u>

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध द्वारा यह स्थापित किया गया है कि महानगरीय बोध अनिवार्य रूप से उन स्थितियों, दैनंदिन तनाव एवं अवसाद की उपज है, जिनका स्रोत महानगर का परिवेश है । लोकतंत्र की विफलता, महानगर में राजनीति और व्यवस्था का द्वंद्व इत्यादि विषय का अध्ययन किया गया है । समाज में मध्यवर्ग की उपस्थिति, इसके सामाजिक संस्कार, परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व, समाज, परिवार एवं व्यक्ति के स्तर पर विभिन्न सामाजिक समस्याओं का नाटकों के माध्यम से दिग्दर्शन किया गया है । बाज़ार की शक्तियों के प्रभाव, स्त्री-पुरुष संबंधों में बदलाव, व्यकित का आत्मनिर्वासन इत्यादि का गहन अध्ययन किया गया है । रंगमंच की कला, अंतरंग एवं बाह्य शिल्प, कला और व्यावसायिकता इत्यादि का अध्ययन किया गया है।

विषय सूची

1. महानगर और महानगरीय बोध 2. समसामयिक नाटकों में महानगरीय राजनीतिक बोध 3. समसामयिक नाटकों में महानगरीय सामाजिक-सांस्कृतिक बोध 4.समसामयिक नाटकों में महानगरीय आर्थिक और बाजारवादी बोध 5. समसामयिक नाटकों के शिल्प में महानगर 6. उपसंहार । परिशिष्ट ।

243. त्रिपाठी (त्र्यम्बक नाथ)

डॉ. रामविलास शर्मा के भाषा-चिंतन में समाज-भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि ।

निर्देशक : प्रो. सुधीश पचौरी

<u>Th 16853</u>

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में भाषा चिंतन की समूची भारतीय और पाश्चात्य परंपरा पर

विचार किया गया है । इसमें यह बताने का प्रयास किया गया है कि बहुत ही शुद्धता और आभिजात्यता के चक्कर में भाषा-चिंतन परंपरा के बहुत ही मूल सूत्रों को छोड़ दिया गया है । समाजभाषा विज्ञान की सैद्धांतिकी के आलोक में भारत की भाषा समयस्या को शर्मा जी के चिंतन के संदर्भ में समझने की कोशीश की गई है । इसमें राजभाषा-राष्ट्रभाषा की समस्या, हिंदी-उर्दू की समस्या तथा हिंदी की व्याकरण संबंधी समस्या पर विचार किया गया है । रामविलास शर्मा ने समाजभाषा विज्ञान की आधारशिला पर बहुत पुरानी चली आ रही ऐतिहासिक भाषा विज्ञान की मान्यताओं को खारिज किया है । यह उस समय का समूचे विश्व के लिए भाषा चिंतन की दुनिया का सबसे बड़ा कार्य था । शर्मा जी ने सामाजिक अंतिर्विरोधों से भाषा विकास की प्रक्रिया को समझाने का प्रयास किया है । भाषा चिंतन से जुड़े विद्वानों ने भाषा विकास कि लिए कभी 'व्याकरणिक कोटियों' को प्रस्ताविक किया तो कभी आर्थिक आधार को । लेकिन शर्मा जी ने भाषा के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश की पहचान करके भाषा विकास के लिए इन परिवेशों का आवश्यक बताया है । शर्मा जी ने भाषा पर समाजभाषा वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया है । मसलन भाषा की उत्पत्ति, भाषा की ध्वनि, प्रकृति, भाषा की भाव प्रकृति आदि । यदि विशेष रूप से भाषा की 'भाव-प्रकृति' और 'ध्वनि-प्रकृति' को देखा जाय तो शर्मा जी ने भाषा के अध्ययन के लिए इन सबका Method के रूप में उपयोग किया है । उनकी इस दृष्टि पर भी इस ग्रंथ में विचार किया गया है ।

विषय सूची

1. भाषा संबंधी अध्ययन : भारतीय और पाश्चात्य । 2. समाजभाषा विज्ञान और भारत की भाषा समस्या । 3. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और रामविलास शर्मा का भाषा चिंतन । 4. सामाजिक अंतर्विरोध और भाषा का विकास : संदर्भ रामविलास शर्मा। 5. भाषा के विविध पक्ष और रामविलास शर्मा । उपसंहार । परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रन्थ सूची ।

244. बर्णवाल (रमेश कुमार)

दिल्ली से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी दैनिकों की भाषा (2005)।

निर्देशक : प्रो. मोहन

<u>Th 16702</u>

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में हिन्दी देनिकों की भाषा का अध्ययन हिन्दी की एक विशिष्ट प्रयुक्ति के रूप में किया गया है । हिन्दी की यह प्रयुक्ति किन अर्थो में विशिष्ट है, इसे कौन सी परिस्थितियां बनाती हैं और इसमें क्या परिवर्तन आए हैं । तथा आ रहे हैं, इन सबका अध्ययन पत्रकारिता और भाषाविज्ञान दोनों ही के मापदंडों पर किया गया है । इस शोध प्रबंध में सन् 2005 में दिल्ली से प्रकाशित हिन्दी दैनिकों का अध्ययन किया गया है । पूरा शोध सन् 2005 के दैनिकों से लिए गए उदाहरणो पर आधारित है । विषय में सन् 2005 का स्पष्ट उल्लेख होने के कारण उदाहरणों में बार-बार वर्ष के उल्लेख की आवृति नही की गई है । इसके अलावा पूरे शोध में दैनिकों के लिए समाचारपत्र और कहीं-कहीं अख़बार नाम का भी प्रयोग किया गया है। समाचारों को अनेक स्थानों पर ख़बर लिखा गया है ।

विषय सूची

1. जनसंचार और समाचारपत्रों की भाषा 2. भाषा-अध्ययन की विभिन्न दृष्टियां 3. दिल्ली से प्रकाशित प्रमुख दैनिक 4. सन् 2005 के प्रमुख समाचार 5. सन् 2005 में प्रकाशित समाचारों के शीर्षकों की भाषा 6. सन् 2005 में प्रकाशित समाचारों की भाषा 7. सन् 2005 में प्रकाशित संपादकीय अग्रलेखों की भाषा 8. उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

245. प्रवीण कौर

गुरु गोबिंद सिंह के काव्य में अप्रस्तुत विधान ।

निर्देशक : डॉ. भुपिन्दर सिंह

Th 16689

सारांश

प्रस्तुत शोध ग्रंथ में गुरु गोबिंद सिंह के काव्य में अप्रस्तुत विधान का अध्ययन किया गया है। गुरु गोबिंद सिंह जी के सृजन के साथ प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत का तालमेंल कैसे संभव था इसी का विशद अध्ययन किया गया है । इस अध्ययन के अंतर्गत सर्वप्रथम अप्रस्तुत विधान का तात्विक विवेचन किया है तदुपरांत काव्य में प्रस्तुत

विधान की आवश्यकता स्पष्ट की गई है । अप्रस्तुत विधान हेतुओं पर प्रकाश डाला गया है । काव्य में मिथकीय प्रयोग किस प्रकार अप्रस्तुत अर्थ को वहन करने में सक्षम है इसे दर्शाया गया है । काव्य में अप्रस्तुत विधान के विधायक उपादानों को लिया गया है । इसमें युग-बोध और उसमें अप्रस्तुत-विधान का वर्णन मुख्य प्रयोजन को संपन्न करने के लिए किया गया है । गुरु गोबिंद सिंह का जीवन दर्शन तथा अप्रस्तुत विधान को लिया गया है।

विषय सूची

1. काव्य सर्जना ओर अप्रस्तुत-विधान 2. गुरु गोबिंद सिंह के काव्य के अप्रस्तुत-विधान के हेतु 3. गुरु गोबिंद सिंह के काव्य में मिथकीय प्रयोग 4. गुरु गोबिंद सिंह के काव्य में समसामयिक परिस्थितियां और अप्रस्तुत-विधान 5. गुरु गोबिंद सिंह के काव्य में अप्रस्तुत-विधान के विधायक उपादान 6. गुरु गोबिंद सिंह के काव्य में युगबोध और अप्रस्तुत विधान 7. गुरु गोबिंद सिंह जी का दर्शन और अप्रस्तुत-विधान 8. उपसंहार । परिशिष्ट ।

246. पाण्डेय (अरुणाकर)

हिन्दी की साप्ताहिक पत्रिकाओं में सांस्कृतिक-विमर्श : 1990 के बाद।

निर्देशिका : डॉ. सुधा सिंह

Th 16694

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध साम्राज्यवाद के आर्थिक शोषण, सांस्कृतिक शोषण तथा पत्रकारिता के लिए आवश्यक सांस्कृतिक भूमिका में शिक्षा और प्रेस के आगमन से लेकर नब्बे के दशक के पूर्व तक की पत्रिकाओं के इतिहास को जानने के लिए प्रयास किया गया है । भूमंडलीकरण का प्रभाव के अंतर्गत उत्तर समय की मीडिया नीति के उस पर पड़ने वाले प्रभावों से आए बदलावों को समझने का प्रयास किया गया है । इसमें भूमंडलीकरण की अवधारणा, प्रकृति तथा यांत्रिकता आदि का विस्तार से वर्णन करते हुए, मिडिया पर आए उसके प्रभाव को उत्तर समय की मीडिया नीति के रूप में समझने का प्रयास किया गया है । खबरों पर एजेण्टा सेटिंग, संतुलन की छद्मता, ख़बर की आर्थिक उपयोगिता तथा गेटकीपिंग जैसे बाज़ारवादी मीडिया मूल्यों के हावी

होने को समझने का प्रयास किया गया है । यह देखने का प्रयास किया गया है कि सांप्रदायिक मुद्दों पर चयनित पत्रिकाएं कैसा जनमत बनाती हैं । आरक्षण की खबरों को मंडल आयोग की सिफारिशों, अन्य पिछडा वर्ग आरक्षण, राजस्थान के गुर्जर आंदोलन तथा महिला आरक्षण के मुद्दों के तहत समझने का प्रयास किया गया है। पितृसत्तात्मक यौनवादी वर्चस्व तथा उसके प्रतिरोध में उभरे आंदोलन एवं बदलावों के चिह्नों को साप्ताहिक पत्रिकाओं में प्रकाशित खबरों के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है । यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि साप्ताहिक पत्रिकाओं ने छद्मआवश्यकताओं को उपभोक्ता की जीवन शैली में स्थापित करने में कैसी भूमिका निभाई है । यह समझाने की कोशिश की गई है कि नब्बे के दशक के उपरांत साहित्य तथा अन्य कलाओं की खबरों को साप्ताहिक पत्रिकाओं में किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है ।

विषय सूची

1.साप्ताहिक पत्रिकाओं की परंपरा, स्वरूप और सामाजिक भूमिका 2. नब्बे के दशक के बाद साप्ताहिक पत्रकारिता का बदलता स्वरूप 3.समाचार की प्रस्तुति और साप्ताहिक पत्रिकाएं 4.सांप्रदायिकता और साप्ताहिक पत्रिकाएं 5. आरक्षण और साप्ताहिक पत्रिकाएं 6. महिला उतपीड़न, महिला आंदोलन तथा महिला सशक्तिकरण और साप्ताहिक पत्रिकाएं 7. संस्कृति उद्योग और साप्ताहिक पत्रिकाएं 8. साहित्य, संस्कृति और साप्ताहिक पत्रिकाएं 9. उपसंहार । परिशिष्ट । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

247. पाण्डेय (सत्यप्रिय)

भारतेंदु-युगीन उन्यासों में नारी की अवधारणा ।

निर्देशक : डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल

<u>Th 16704</u>

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में नारी अवधारणा और भारतेंदु युगीन उपन्यासों पर प्रकाश डाला गया है । इसके अंतर्गत उन आधुनिक ज्ञान विज्ञान की हलचलों तथा सुधारवादी आंदोलनों की चर्चा है जिन्होंने भारतेंदु युग की नारी को एक नई दिशा दी उसे मध्यकालीन जड़ताओं से मुक्ति दिलाई । भारतेंदु युगीन उपन्यासकारों के दुष्टिकोण

तथा उनकी नारी चेतना को उनके द्वारा निर्मित नारी चरित्रों के आलोक में देखा समझा गया है । इसके अंतर्गत नारीवादी आंदोलनों की चर्चा की गई है । खासकर उन आंदोलनों की जो भारत में चले और जिनकी ऐतिहासिक भूमिका स्त्रियों की सामाजिक चेतना को विकसित करने में रही है । इसमें तद्‌युगीन उपन्यासों के शिल्प विधान को स्पष्ट किया गया है। जिसके अंतर्गत शिल्प के स्वरूप उसके तत्वों तथा उसकी बनावट एवं बुनावट को स्पष्ट किया गया है ।

विषय सूची

1. नारी अवधारणा : सिद्धांत विवेचन 2. नारी की अवधारणा और भारतेंदु युग 3. भारतेंदु युगीन उपन्यासों में नारी 4. स्त्री विमर्श और भारतेंदु युगीन नारी अवधारणा 5. भारतेंदु युगीन उपन्यासों का शिल्प-विधान 6. उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

248. फुलोरिया (हरिप्रिया)
रीतिकालीन सतसई साहित्य में लोक-संस्कृति की अभिव्यक्ति ।
निर्देशक : डॉ. पूरनचंद टण्डन
<u>Th 16706</u>

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में रीतिकालीन सतसई साहित्य में व्याप्त लोक-सांस्कृतिक चेतना के स्वरूप को ही विशेष रूप से उद्‌घाटित करने का प्रयास किया गया है । इस संदर्भ में सर्वप्रथम सतसई साहित्य की परंपरा का अवलोकन कर एक ओर रीतिकालीन सतसईकारों की विशिष्टता पर प्रकाश डाला गया है, वहीं सतसईकारों के लोक-सांस्कृतिक अवदान की निष्पक्ष व्याख्या की गई है। इस शोध प्रबंध में सतसई शब्द का अर्थ एवं स्वरूप स्पष्ट करते हुए सतसई साहित्य परंपरा का कालक्रमानुसार परिचय दिया गया है। इसमें लोक संस्कृति का तात्विक विश्लेषण किया गया है। इसमें रीतिकालीन सतसई साहित्य का विषयवस्तु के आधार पर वर्गीकरण किया गया और तत्पश्चात वर्गीकृत सतसईयों के प्रतिपाद्यको को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसमे लोक-विश्वास, मान्यताऐं, रीतिरिवाज, लोक-साहित्य, लोक-कला जैसे विविध लोक तत्त्वों को रीतिकालीन सतसई साहित्य के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट किया गया है। इसमें रीतिकालीन सतसई साहित्य पर समाज के विविध घटक जैसे पारस्परिक संबंध,

अतिथि सत्कार, वर्ण-व्यवस्था, नारी, ज्योतिष आदि के आलोक में प्रकाश डालते हुए रीतिकालीन सतसई साहित्य में संस्कृति का कितना स्वरूप अभिव्यक्त हुआ है, इसको स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसमें धर्म, अध्यात्म एवं दर्शन के परिप्रेक्ष्य में रीतिकालीन सतसई साहित्य का मूल्यांकन करते हुए सतसईकारों की धार्मिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक विचारधारा को व्यक्त किया गया है । इसमें लोक संस्कृति व्यंजक शिल्प की विविध विशेषताओं - शब्द योजना, अलंकार, छंद, उपमान, लोकोक्ति, मुहावरे आदि का विश्लेषण किया गया है ।

विषय सूची

1. सतसई साहित्य परंपरा : उद्भव एवं विकास 2. लोक-संस्कृति : अभिप्राय, स्वरूप एवं महत्त्व 3.रीतिकालीन सतसई साहित्य का वर्गीकरण एवं प्रतिपाद्य 4. रीतिकालीन सतसई-साहित्य में अभिव्यक्त लोक-तत्त्वों का स्वरूप 5. रीतिकालीन सतसई-साहित्य में अभिव्यक्त समाज और संस्कृति 6. रीतिकालीन सतसई साहित्य में अभिव्यक्त धर्म अध्यात्म एवं दर्शन का स्वरूप 7. रीतिकालीन सतसईकारों की लोक-संस्कृति व्यंजक भाषा 6. उपसंहार। परिशिष्ट।

249. बिभा कुमारी

मृदुला गर्ग और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास : स्त्री विमर्श का संदर्भ ।

निर्देशिका : प्रो. (श्रीमती) प्रेम सिंह

<u>Th 16695</u>

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध मे स्त्री विमर्श की ऐतिहासिकता व समसामयिकता के अंतर्गत प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक स्त्री की स्थिति का आकलन करने का प्रयास किया गया है । स्त्री-विमर्श के सार्थक स्वरूप को प्रकट किया गया है। मृदुला गर्ग एवं मैत्रयी पुष्पा दोनों ही रचनाकारों के उपन्यासों के वस्तु तत्व पर स्त्री विमर्श का अत्यधिक प्रभाव है । दोनों के उपन्यासों में स्त्री की स्वतंत्रता, उसके अधिकार और उसके प्रति न्याय को समर्थन मिला है। दोनों ही रचनाकारों के उपन्यासों में स्त्री पात्रों की सशक्त भूमिका पर प्रकाश डाला गया है । मृदुला गर्ग एवं मैत्रयी पुष्पा के उपन्यासों के स्त्री पात्रों की आकांक्षाएं, स्त्री-विमर्श का सबसे ठोस प्रमाण के रूप में प्रस्तुत है ।

विषय सूची

1. स्त्री विमर्श की ऐतिहासिकता व समसामयिकता 2. स्त्री विमर्श की सार्थकता 3. मृदुला गर्ग एवं मैत्रयी पुष्पा के उपन्यासों में वस्तु तत्व पर स्त्री विमर्श का प्रभाव 4. स्त्री पात्रों की सशक्त भूमिका 5. स्त्री पात्रों की आकांक्षाएं 6. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची । परिशिष्ट ।

250. भारती (रीता)

मध्यकालीन मूल्य व्यवस्था और गिरिधर का काव्य ।

निर्देशिका : डॉ. आशा जुल्का

Th 16697

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में मध्यकालीन मूल्य व्यवस्था तथा नीतिकवियों का दृष्टिकोण विशेष रूप से गिरिधर कविराय जी का मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है। मूल्य के अर्थ ओर स्वरूप पर विस्तृत चर्चा की गई है । मूल्यों का वर्गीकरण मानव मूल्य, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा नैतिक मूल्य के अन्तर्गत किया गया है। मध्ययुग की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए पूर्वमध्ययुगीन एवं उत्तरमध्ययुगीन मूल्यों को विभिन्न संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है । मध्ययुगीन नीति कवि गिरिधर कविराय जी के व्यक्तितव, कृतित्व एवं उनकी रचनाओं का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है । कविराय के काव्य में निहित सामाजिक मूल्य में कर्तव्यनिष्ठा, संगठनात्मक व्यवस्था नारी विषयक विचार, सौहार्दपूर्ण व्यवहार तथा मैत्रीभाव पर विस्तृत चर्चा की गई है। जीवन मूल्य और संस्कृति तथा जीवन और साहित्य के विषय में बताते हुए गिरिधर कविराय जी के काव्य में विभिन्न मानव मूल्यों का विवरण दिया गया है । कविराय जी के काव्य में नियतिवादी, कर्मवादी, दृढ़विश्वास, आस्थावादी, अहंकार, मुक्ति, मन की निर्मलता जैसे विषयों पर चर्चा की गई है । कविराय जी के काव्य में राजनैतिक मूल्य पर चर्चा करते हुए राजा के गुण, अवगुण कूटनीति तथा राजप्रशस्ति का उल्लेख किया गया है । कविराय के काव्य में प्राप्त नैतिक मूल्यों को उद्घाटित किया गया है। जिसमें महतवपूर्ण रूप से वैयक्तिक नीति, पारिवारिक नीति तथा सामाजिक नीति को स्थान दिया गया है । कविराय जी के काव्य में प्राप्त धार्मिक तथा अध्यात्मिक मूल्यों पर चर्चा करते हुए बाह्य आडम्बर, जादू-टोना, वर्णव्यवस्था, ईश्वर, वेदान्त, आत्मा आदि विषयों को बताया गया है। गिरिधर कविराय जी के काव्य में आर्थिक मूल्यों का अध्ययन भी किया गया है।

विषय सूची

1. मूल्यव्यवस्था अवधारणा, स्वरूप एवं परिव्याप्ति 2. मध्ययुगीन मूल्य व्यवस्था और साहित्य 3. गिरिधर कविराय का जीवन, व्यक्तित्व एवं रचना संसार 4. गिरिधर कविराय के काव्य में सामाजिक मूल्य 5. गिरिधर कविराय के काव्य में मानव मूल्य 6. गिरिधर कविराय के काव्य में जीवन मूल्य 7. गिरिधर कविराय के काव्य में राजनैतिक मूल्य 8. गिरिधर कविराय के काव्य में नैतिक मूल्य 9. गिरिधर कविराय के काव्य में धार्मिक व अध्यात्मिक मूल्य 10. गिरिधर कविराय के काव्य में आर्थिक मूल्य 11. उपसंहार । सन्दर्भ ग्रंथ सूची ।

251. ममतेश रानी

हिन्दी भाषा में अनेकार्थकता : प्रकृति एवं प्रकार्य ।

निर्देशक : प्रो. मोहन

Th 16687

सारांश

शोध प्रबंध में अनेकार्थकता की भूमिका का आकलन किया है। हिन्दी भाषा में अनेकार्थकता का क्या स्वरूप है, उसके उद्‌भव के कौन-कौन से स्रोत हैं, उसके विकास के क्या कारण हैं- इन सभी विषयों पर विचार किया गया है । तथा साथ ही साहित्यिक भाषा में अनेकार्थकता की प्रकृति एवं प्रकार्य का विश्लेषण किया गया है। इस संदर्भ में अनेकार्थकता के साथ अर्थ के अन्य रूपों यथा सहप्रयोगार्थ, संपृक्तार्थ, संरचनार्थ आदि का भी विवेचन किया गया है । प्रकार्य के अंतर्गत संप्रेषण व्यापार, कथ्य-प्रस्तुति तथा साहित्यिकता के सृजन में अनेकार्थकता की भूमिका का विवेचन किया गया है ।

विषय सूची

1. हिन्दी भाषा एवं अनेकार्थकता 2. सामान्य हिन्दी में अनेकार्थकता 3. साहित्यिक हिन्दी में अनेकार्थता 4. अनेकार्थकता और प्रकार्य 5. अनेकार्थकता और अस्पष्टता 6. उपसंहार । परिशिष्ट ।

252. राजीव रंजन बंधु

कुँवर नारायण के सर्जन में परम्परा और आधुनिकता ।

निर्देशक : प्रो कृष्णदत्त पालीवाल

Th 16693

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध कुँवर नारायण के काव्य-सृजन, कहानियों एवं आलोचना कर्म पर ही शोध को केन्द्रित किया गया है । उनके सात काव्यग्रंथ, एक कहानी संग्रह एवं एक आलोचना-संग्रह शोध के मुख्य आधार रहे हैं । यह शोध प्रबंध छायावादोत्तर रचना परिदृश्य में प्रगतिवाद, सप्तकों का प्रकाशन, नई कविता के उदय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं इन सभी परिस्थितियों के बीच कुँवर नारायण के सृजन कम्र की शुरूआत एवं विशिष्टता पर केन्द्रित है। इसमें उनकी कविताओं, कहानियों एवं आलोचना का एक परिचय, इन रचनाओं के देश-काल की स्थिति और मुख्यतः उनकी काव्य-चेतना के विाकस पर अनुसंधान किया गया है। साहित्य सृजन में परंपरा और आधुनिकता का सदेव महत्त्व रहा है। किंतु उत्तर-आधुनिकता ने इन दोनों को ही निरर्थक सिद्ध किया है। ऐसे में परंपरा और आधुनिकता के प्रति कुँवर नारायण की दृष्टि को एवं उसकी प्रासंगिकता को खोजना और सामने लाने का प्रयास किया गया है। इसमें कुँवर नारायण की मिथक-चेतना, इतिहास-चेतना, अस्तित्व-बोध और सामाजिक-बोध, मनुष्यता और सृजनशीलता के संदर्भ में परंपरा ओर आधुनिकता की भूमिका को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है। उनकी कहानियों एवं आलोचना में भी परंपरा एवं आधुनिकता के तत्वों की पहचान का प्रयास किया गया है। इसमें भाषिक-संरचना, मिथक-संरचना, बिंब-विधान, प्रतीक, अप्रस्तुत योजना एवं छंद विधान के स्तर पर परंपरा एवं आधुनिकता के तत्वों की पहचान की गई है ।

विषय सूची

1. छयावादोत्तर रचना परिदृश्य और कुँवर नारायण 2. कुँवर नारायण का रचना-संसार 3. परंपरा और आधुनिकता : सैद्धांतिक विवेचन 4. कुँवर नारायण के सर्जन में परंपरा और आधुनिकता के संदर्भ 5. शिल्प के स्तर पर कुँवर नारायण के सर्जन में परंपरा और आधुनिकता 6. उपसंहार । परिशिष्ट ।

253. राजेश कुमार

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यग्य-साहित्य के लक्ष्य-विषय : हरिशंकर परसाई, शरद जोशी और रवीन्द्रनाथ त्यागी के संदर्भ में ।

निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

Th 16684

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में व्यंग्य की अवधारणा, स्वरूप और प्रकृति जानने के अलावा व्यंग्य के स्रोत भी चिह्नित किये गये हैं अर्थात् विसंगति और विद्रूपताओं का भी अध्ययन किया गया है । स्वातंत्र्योत्तर परिवेश और उसमें व्याप्त उन सभी विसंगति और विद्रूपताओं को पहचानने ओर समझने का प्रयास किया गया है, जिनके कारण व्यंग्य प्रस्फुटित होता है । स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में व्याप्त किन-किन विसंगति और विद्रूपताओं पर परसाई, जोशी और त्यागी जी ने प्रहार किया है अर्थात उनके लक्ष्य-विषय क्या है ? तथा तीनों व्यंग्य लेखकों की व्यंग्य-दृष्टि का तुलनातमक अध्ययन भी किया गया है। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी और रवीन्द्रनाथ त्यागी के व्यंग्य-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन उनके लक्ष्य विषयों के अलावा उनके व्यंग्य साहित्य की शिल्पगत विशिष्टताओं और भाषा वैशिष्ट्य के आधार पर किया गया है। हिन्दी व्यंग्य-साहित्य में परसाई, जोशी ओर त्यागी जी के योगदान और उनके महत्त्व को समझने का प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. व्यंग्य और व्यंग्य-साहित्य 2. स्वातंत्र्योत्तर परिवेश और व्यंग्य-साहित्य 3. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य-साहित्य के लक्ष्य-विषय एवं परसाई, जोशी और रवीन्द्रनाथ त्यागी की व्यंग्य-दृष्टि 4. हरिशंकर परसाई, शरद जोशी और रवीन्द्रनाथ त्यागी का व्यंग्य-साहित्य और शिल्पगत विशिष्टताएं 5. समकालीन हिन्दी व्यंग्य-साहित्यकारों पर परसाई, जोशी एवं रवीन्द्रनाथ त्यागी का प्रभाव 6. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची।

254. रावल (चारु)

कबीर और रज्जब अली के नैतिक आदर्शों का तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

Th 16686

सारांश

शोध ग्रंथ में नीति, नैतिकता और नैतिक आदर्शों के मूलभूत तत्वों की चर्चा की गई है। भारतीय वाङ्मय के परिप्रेक्ष्य में नीतिकाव्य की परंपरा और रीतिकाल तक उसके विकास के विषय में बताया गया है । इसमें कबीर और रज्जब अली के जीवन-काल, उनके व्यक्तित्व एवं उनकी कृतियों का वर्णन किया गया है । कबीर और रज्जब अली के काव्य को प्रभावित करने वाली तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों की भी चर्चा की गई है। मानव-जीवन में वैयक्तिक और पारिवारिक नैतिक आदर्शों का महत्त्व बताते हुए कबीर और रज्जब के काव्य में वर्णित वैयक्तिक और पारिवारिक नैतिक आदर्शों पर विचार किया गया है। इसमें व्यक्ति और समाज के पारस्परिक संबंध एवं मध्ययुगीन समाज के स्वरूप का अवलोकन करते हुए आलोच्य कवियों के समाज-दर्शन को प्रस्तुत किया गया है। मध्ययुग में धर्म की स्थिति बताते हुए कबीर और रज्जब की धर्म संबंधी नैतिक विचारधारा की तुलना की गई है। कबीर और रज्जब अली के नैतिक आदर्शों की भाषा का शब्द-भंडार, छंद, अलंकार, उलटबांसियों आदि के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ।

विषय सूची

1. नीति, नैतिकता और नैतिक आदर्श : अवधारणा और स्वरूप 2. भक्तिकालीन कवि कबीर एवं रीतिकालीन कवि रज्जब अली 3. वैयक्तिक और पारिवारिक नैतिक आदर्शों की दृष्टि से कबीर और रज्जब अली के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन 4. सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक, नैतिक आदर्शों की दृष्टि से कबीर और रज्जब अली के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन 5. कबीर और रज्जब अली के काव्य में धार्मिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक नैतिक आदर्शों का तुलनात्मक अध्ययन 6. कबीर और रज्जब अली के नैतिक आदर्शों की काव्य-भाषा का तुलनात्मक अध्ययन 7. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

255. रेखा

यथार्थ की अवधारणा और भारतेन्दुयुगीन नाटक ।

निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

Th 16703

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में यथार्थ के स्वरूप तथा अन्य अवधारणाओं के साथ उसके संबंध को दिखाते हुए नाटक में उसके महत्त्व को स्पष्ट किया गया है । राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक चिन्तन में यथार्थ की भूमिका को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है । राजनीतिक यथार्थ के अन्तर्गत भारतेन्दुयुगीन नाटकों की क्या भूमिका रही, इसे महत्त्व दिया गया है । समाज के विभिन्न पहलुओं और अर्थ के अभाव तथा अति से समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को नाटक में खोजा गया है । शोध प्रबंध में यह शोध करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार भारतेन्दुयुग के नाटककारों ने धर्म की आड़ में समाज में हो रहे अत्याचारों का खुलासा किया है । संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को नाटककारों ने अनछुआ न कर उनसे समबन्धित समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है ।

विषय सूची

1. यथार्थ और नाटक 2. भारतेन्दुयुगीन नाटककारों का पारिवेशिक चिन्तन और यथार्थ 3. राजनीतिक यथार्थबोध और भरतेन्दुयुगीन नाटक 4.सामाजिक-आर्थिक यथार्थबोध और भारतेन्दुयुगीन नाटक 5. सांस्कृतिक-धार्मिक यथार्थबोध और भारतेन्दुयुगीन नाटक 6. उपसंहार । परिशिष्ट । सहायक ग्रन्थ सूची ।

256. लक्ष्मी देवी

हिन्दी गद्य-लेखन का औपनिवेशिक सन्दर्भ और सत्यवती मल्लिक का साहित्य ।

निर्देशिका : डॉ. सुधा सिंह

Th 16683

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध औपनिवेशिक भारत में हिन्दी गद्य की विकास परम्परा को दर्शाता है साथ ही भारत के राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में स्त्री लेखन के स्वरूप का चित्रण करता है । इस शोध में स्त्री लेखन की उपलब्धियों को सामने लाते हुए सत्यवती मल्लिक एवं उनकी गद्य रचनाओं की प्रासंगिकता को प्रकट करने की कोशिश की गई

है। इसमें उपनिवेशवाद एवं औपनिवेशिकता का अर्थ एवं उसके स्वरूप पर विचार किया गया है। तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों की विवेचना की कोशिश की गई है। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, भूमण्डलीकरण एवं नवउपनिवेशवाद की विवेचना करते हुए उसके प्रभावों को भी जानने का प्रयास किया गया है । इसमें हिन्दी गद्य-लेखन की विकास यात्रा पर विचार किया गया है तथा विभिन्न प्रचार आन्दोलनों, विभिन्न संस्थाओं एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के योगदान को भी जानने की कोशिश की गई है । सत्यवती मल्लिक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व की चर्चा की गई है । सत्यवती जी की सम्पूर्ण रचनाओं के औपनिवेशिक सन्दर्भ पर विचार किया गया है एवं औपनिवेशिक भारत में सत्यवती मल्लिक एवं उनकी रचनाओं के योगदान को जानने की कोशिश की गई है । सत्यवती मल्लिक एवं अन्य समकालीन लेखिकाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए उनके योगदान को रेखांकित करने का प्रयत्न किया गया है । भाषा और साहित्य में संबंध को स्पष्ट करते हुए स्त्रीवादी लेखन की दृष्टि से कितनी पारिमार्जित एवं परिष्कृत है जानने का प्रयत्न किया गया है ।

विषय सूची

1. उपनिवेशवाद एवं औपनिवेशिकता : आशय एवं स्वरूप 2. उपनिवेशवाद एवं औपनिवेशिकता का बदलता परिदृश्य 3. औपनिवेशिक भारत में हिन्दी गद्य लेखन विकास एवं परम्परा 4. सत्यवती मल्लिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व 5. सत्यवती मल्लिक के साहित्य का औपनिवेशिक सन्दर्भ 6. सत्यवती मल्लिक के गद्य साहित्य का अन्य समकालीन लेखिकाओं के गद्य-सहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन 7.सत्यवती मल्लिक के साहित्य की भाषिक संरचना 8. उपसंहार । परिशिष्ट ।

257. वर्मा (दीपिका)

साठोत्तरी हिन्दी नाटकों में स्त्री-विमर्श ।

निर्देशक : डॉ. अपूर्वानन्द

<u>Th 16705</u>

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में स्त्री विमर्श के अर्थ एवं अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए स्त्री

जीवन से जुड़े नारीवादी आंदोलन व स्त्री विमर्शवादी चिंतन के अंतर्गत स्त्री अस्मिता, स्त्री सशक्तीकरण व स्त्री देह से जुड़े विभिन्न प्रकार के मुद्दों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है । यौवन एवं जेंडर के बीच के भेद को स्पष्ट करते हुए समाज में दोनों ही कारणों से होने वाले स्त्री शोषण व पुरुष आधिपत्य को दर्शाने की कोशिश की गई है । भारतेंदुकालीन नाटकों से लेकर प्रसादोत्तर नाटकों में स्त्री की विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं के साथ-साथ इन नाटकों के माध्यम से स्त्री संबंधी दृष्टिकोण को उजागर करने का प्रयास किया गया है । साथ ही उन मुद्दों को उजागर करने का प्रयास किया गया है जो स्त्री विमर्श में उठाए गए हैं । नाटककार अपने नाटकों के माध्यम से पेश किए गए स्त्री चरित्र द्वारा किसी प्रकार से स्त्री विमर्शवादी प्रश्नों को सामने रखता है, इसे एक एक नाटक के अध्ययन और विश्लेषण द्वारा प्रतिपादित करने का प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. स्त्री-विमर्श : अवधारणात्मक विविध बिंदु 2. स्त्री विमर्श यौवन एवं जेंडर के परिप्रेक्ष्य में 3. आधुनिक हिन्दी नाटकों में स्त्री की उपस्थिति 4. साठोत्तरी हिन्दी नाटकों में स्त्री-विमर्श 5. उपसंहार । परिशिष्ट ।

258. शर्मा (अनन्ता)

हिन्दी कहानी का आठवाँ दशक : राजनीतिक विसंगति और मानवीय मूल्यों का चिंतन ।

निर्देशक : डॉ. तेज सिंह

<u>Th 16692</u>

सारांश

प्रस्तुत शोध कार्य में विसंगति और मानवीय-मूल्य की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उनके अंतर्संबंध को बताया गया है स्वतंत्रता के बाद राजनीति का स्वरूप और उसकी दशा को स्पष्ट किया गया है । सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य का प्रभाव स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों की कहानियों पर किस रूप में आया है उसे स्पष्ट रूप से बताया गया है। आठवें दशक की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों का अवलोकन किया गया है। आठवें दशक की कहानीकारों की

राजनीतिक कहानियों में चुनाव, लालफीताशाही, आपातकालीन स्थिति और सांप्रदायिक तनाव को स्पष्ट रूप से बताया गया है । आठवें दशक के जनवादी कहानीकारों की कहानियों में सामाजिक जीवन की परिस्थितियां और समाज में उपेक्षित लोगों के जनसंघर्ष को बताया गया है और बदलते राजनीतिक मूल्यों को कहानियों के माध्यम से बताया गया है ।

विषय सूची

1. राजनीतिक विसंगति और मानवीय मूल्य : अवधारणात्मक समस्याएं 2. स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक-राजनीतिक विसंगति और हिन्दी कहानी (1950-1970) 3. आठवें दशक की युगीन परिवेशगत विसंगतियां (1970-1984) 4. आठवें दशक की कहानियों में राजनीतिक विसंगतियों की अभिव्यक्ति 5. आठवाँ दशक : बदलते सामाजिक सरोकार और मानवीय मूल्य 6. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

259. संगीता कुमारी

साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास और उपभोक्ता संस्कृति ।

निर्देशक : प्रो. सुधीश पचौरी

Th 16698

सारांश

शोध प्रबंध के अंतर्गत साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में उपभोक्ता संस्कृति के चिह्नों को अंतरानुशासनिक दृष्टि से विश्लेषित करने का प्रयास है। इसमें आधुनिक समाज में उपभोग की प्रचलित-अप्रचलित अवधारणा को देखा-परखा गया है। इसके अतिरिक्त उपभोक्ता समाज के प्राचीन एवं आधुनिक स्वरूप का विस्तार से वर्णन किया गया है। साथ ही भारत की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपरा में उपभोक्ता संस्कृति के चिह्नों की पहचान भी की गयी है। आधुनिक समाज, मध्यवर्ग और उपन्यास से उसके संबंध को दर्शाया गया है । हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, औद्योगिक मध्यवर्ग एवं उत्तर औद्योगिक मध्यवर्ग का चित्रण भी किया गया है। साठोत्तरी महत्वपूर्ण उपन्यासों का सामान्य परिचय दिया गया है । उपभोक्ता चिह्नों का विश्लेषण चिह्नशास्त्रीय दृष्टिकोण एवं पद्धति के अंतर्गत किया गया है । उपभोक्ता संस्कृति के दबाव के बीच साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों के यथार्थवादी कथा-शिल्प में आए बदलावों को रेखांकित किया गया

हैं। साथ ही कथा-विन्यास पर आए उपभोक्तावादी संस्कृति के दबावों पर प्रभाव एवं विश्लेषण भी किया गया ।

विषय सूची

1. उपभोक्ता संस्कृति : परिभाषा और स्वरूप 2. उपन्यास और उपभोक्ता समाज का संबंध 3. साठोत्तरी महत्त्वपूर्ण उपन्यासों का सामान्य परिचय 4. उपन्यासों में उपभोक्ता संस्कृति के चिह्न 5. उपभोक्ता संस्कृति का दबाव : यथार्थ और उपन्यास के शिल्प का बदलता स्वरूप 26. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

260. सिंह (भीम)

विजयदान देथा के कथा-साहित्य में लोक-जीवन ।

निर्देशक : प्रो. मोहन

Th 16691

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में लोक शब्द की व्युत्पत्ति, व्याख्या, प्राचीनता, अर्थ एवं परिभाषा पर विचार-विमर्श किया गया है। इसके अतिरिक्त पश्चिम में लोक-साहित्य के उदय के कारणों एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य में इसके विकास के इतिहास पर संक्षेप में प्रकाश डालने का प्रयतन किया गया है लोक-साहित्य, जनपदीय साहित्य, जन-साहित्य, जनवादी-साहित्य एवं लोकप्रिय-साहित्य के परस्पर संबंधों की जांच-पड़ताल करने की कोशिश भी की गयी है। लोक-जीवन के पहचान के बिंदुओं एवं इसको निर्मित करने वाले कारकों का विश्लेषण एवं विवेचन करने का प्रयत्न किया गया है। प्रारंभिक जीवन, कविता की शुरूआत, शरत-साहित्य से परिचय, छेडखानी की कहानी, लेखन एवं पठन इन शीर्षकों के अंतर्गत विजयदान देथा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को खंगालने की कोशिश की गई है। आदमजाद, महामिलन, प्रतिशोध, त्रिवेणी एवं मरवण उपन्यासों के विवेचन-विश्लेषण द्वारा विजयदान देथा की विषयवस्तु पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। ऐतिहासिक विकास क्रम को अपनाते हुए कहानी-संग्रह का विवेचन-विश्लेषण किया गया है। सरल-रेखा का सौंदर्य, कुछ सवाल, अंतर्वस्तु का उद्घाटन, कथा की बुनवाट एवं शुरूआत, छोगे, प्रकृति, कहावतें एवं परिप्रेक्ष्य और मूल एवं अनूदित रूप इत्यादि उपशीर्षकों के अंतर्गत विजयदान देथा के अभिव्यंजना-पक्ष

एवं कला के मर्म को सामने लाने का प्रयत्न किया गया है।

विषय सूची

1. लोक-साहित्य की अवधारणा एवं स्वरूप 2. लोक-जीवन : लक्षण एवं विधान 3. विजयदान देथा का जीवन-परिचय 4. विजयदान देथा के उपन्यासों में चित्रित लोक-जीवन 5. विजयदान देथा की कहानियों में चित्रित लोक-जीवन 6. विजयदान देथा की कला और भाषा 7. उपसंहार । परिशिष्ट ।

261. सिंह (मंजुल कुमार)
बीसवीं सदी के अंतिम दशक में हिंदी साहित्य का वैचारिक विमर्श ।
निर्देशक : डॉ. कृष्णदत्त शर्मा
<u>Th 16852</u>

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध के अन्तर्गत सामाजिक, आर्थिक , राजनीतिक परिवर्तनों का जायजा लिया गया है जो समकालीन वैचारिक विमर्शों के पीछे सक्रिय हैं। साथ ही उन सामाजिक दशाओं पर भी रोशनी डालने की कोशिश की गई है, जिसकी वज़ह से हाशिए पर की अस्मिताएँ मसलन नारी और दलित विमर्श के केन्द्र में आ गए है। आधुनिकता और उत्तर-आधुनिकता की वैचारिक सरणियों, उसके प्रमुख विचारकों और उसकी आलोचना का विस्तृत विवेचन किया गया है। पूरब और पश्चिम में नारी संबंधी पूर्वाग्रहों, के साथ-साथ नारीवादी विचारकों द्वारा दी गई नारीवाद की परिभाषा की भी विवेचन किया गया है । पितृसत्ता और सेक्स/जेंडर विभेद को विवेचित करने का प्रयास किया गया है। जिसकी वजह से नारीवाद को जैविक निर्धारणवाद को खारिज़ करने में सहायता मिली । हिंदी की नारीवादी उपन्यासकारों और कवयित्रियों की रचनाओं का विश्लेषण नारीवादी नजरिये से किया गया है । 'दलित' शब्द की उत्पत्ति, उसकी विभिन्न व्याख्याओं, दलित साहित्य की अवधारणा और स्वरूप के विषय में विभिन्न वाद-विवादों का जिक्र किया गया है । दलित विमर्श के एक अन्य विवादास्पद मुद्दे सहानुभूति बनाम स्वानुभूति पर विचार किया गया है। दलित साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र पर विचार किया गया है ।

विषय सूची

1. विषय प्रवेश । 2. आधुनिकता और उत्तर-आधुनिकता । 3. नारीवादी विमर्श। 4. दलित विमर्श । 5. उपसंहार । संदर्भ ग्रन्थ सूची ।

262. सिंह (महेन्द्र)
हिन्दी में दलित विमर्श और कथा लेखन ।
निर्देशक : डॉ. तेज सिंह
Th 16685

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में भारतीय समाज व्यवस्था के रूप में हिन्दू समाज व्यवस्था और दलित अस्पृश्यता को तथा ब्रिटिश सरकार की अछूत नीति, समाज सुधार आन्दोलन तथा ईसाई मिशनरियों को समझा गया है । शूद्र-अतिशूद्र-समुदाय के परिवर्तनवादी आंदोलनों का अध्ययन तथा दलित साहित्य आंदोलन का अध्ययन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । बुद्ध, फुले, अंबेडकर की विचारधारा तथा दलित पैंथर और मार्क्सवाद का विश्लेषण किया गया है । दलित कथा साहित्य में दलित समस्याएं, अस्मिता की खोज, सामाजिक न्याय का प्रश्न और स्त्री की स्थिति को विश्लेषित किया गया है । दलित एवं गैरदलित लेखकों की सौन्दर्य दृष्टि, भाषा और शिल्प तथा दलित कथा लेखन की संभावनाओं को तलाशने का प्रयत्न किया गया है ।

विषय सूची

1. दलित विमर्श की ऐतिहासिक प्रक्रिया 2. दलितेतर कथा साहित्य में दलित प्रश्न 3. दलित साहित्य का वैचारिक आधार 4. दलित कथा लेखन में दलित विमर्श 5. दलित कथा लेखन और सौंदर्य मूल्यों का प्रश्न 6. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

263. सिंह (सत्यप्रकाश)
रघुवीर सहाय के काव्य में समय, सत्ता और राजनीति ।
निर्देशक : डॉ. प्रेम सिंह
Th 16851

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध के अन्तर्गत समय, सत्ता और राजनीति की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है तथा भूमंडलीकरण के दौर में इनके बदलते स्वरूप पर चर्चा की गयी है। स्वतंत्रता पूर्व आधुनिक हिन्दी साहित्य में समय, सत्ता और राजनीति के बोध का स्वरूप के अन्तगर्त स्वतंत्रता से पहले की राजनीति और सत्ता पर प्रकाश डाला गया है। स्वातंत्र्योत्तर युग में समय, सत्ता और राजनीति का बदलता अन्तःसम्बन्ध एवं रचनाशीलता पर उसका प्रभाव के अन्तगर्त स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति और सत्ता से उनकी सांठ-गांठ का प्रश्न हिन्दी साहित्य के संदर्भ में उठाया गया है । रघुवीर सहाय के काव्य में व्यक्त समय, सत्ता और राजनीति के बोध का अलग-अलग मूल्यांकन किया गया है । स्वातंत्र्योत्तर दृष्टिविहीन भारतीय राजनीति तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं के भटकाव और आम इंसान से उनके बदलते अन्तःसम्बन्धों का प्रश्न उठाया गया है। अन्य स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कवियों की कविताओं के माध्यम से रघुवीर सहास के यथार्थबोध के स्वरूप को रेखांकित किया गया है । रधुवीर सहाय के काव्य-विन्यास में समय, सत्ता और राजनीति की बुनावट में कवि की कविताओं का शिल्प संबंधी मूल्यांकन किया गया है ।

विषय सूची

1. समय, सत्ता और राजनीति की अवधारणा एवं इनका कलात्मक रूपायन । 2. आधुनिक हिन्दी साहित्य में समय, सत्ता और राजनीति के बोध का स्वरूप । 3. रधुवीर सहाय के काव्य में समय, सत्ता और राजनीति के बोध का स्वरूप । 4. रधुवीर सहाय के काव्य में अभिव्यक्त समय, सत्ता और राजनीति के अन्तः सम्बन्धों का विकास । 5. रधुवीर सहाय के काव्य-विन्यास में समय, सत्ता और राजनीति की बुनावट । उपसंहार । संदर्भ ग्रन्थ सूची ।

264. सुधा रानी

दिनकर के काव्य में समाज-बोध ।

निर्देशक : प्रो. कैलाशनारायण तिवारी

Th 16690

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में बोध का अर्थ स्पष्ट कर समाजबोध की अवधारणा पर प्रकाश डाला गया हैं। समाजबोध के विभिन्न आयामों को स्पष्ट कर एक साहित्यकार के संदर्भ में समाजबोध की चर्चा की गई है । दिनकर जी के समाजबोध के प्रेरक तत्त्वों के रूप में उनके जीवन की पृष्ठभूमि, बाल-संस्कार, समकालीन परिस्थितियां, समकालीन साहित्यकारों, महान विचारकों, विभिन्न सांस्कृतिक आंदोलनों एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका को स्पष्ट किया गया है । कवि के राष्ट्र बोध को उनके समाजबोध के विकास की एक कड़ी के रूप में प्रस्तुत किया गया है । कवि दिनकर के समाजबोध के व्यापक स्वरूप को विश्लेषित किया गया है । कवि की सामाजिक सजगता एवं उनके प्रगतिमूलक स्वर को रेखांकित किया गया है । दिनकर के काव्य में सांस्कृतिक बोध के उदात्त रूप को अभिव्यक्त किया गया है । कवि दिनकर की मानवतावादी दृष्टि को उनके समाजबोध के चरम उत्कर्ष के रूप में चित्रित किया गया है । यहां मानव-जीवन की विभिन्न चिरंतन समस्याओं पर कवि के मौलिक विचारों को प्रस्तुत किया गया है ।

विषय सूची

1. समाजबोध : स्वरूप-विश्लेषण 2. दिनकर के समाजबोध के प्रेरक-तत्त्व और उनका सृजन-संसार 3. दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय-बोध का व्यापक स्वरूप 4. दिनकर के काव्य में समाजबोध और प्रगतिमूलक स्वर 5. दिनकर के काव्य में सांस्कृतिक बोध की उदात्त अभिव्यक्ति 6. दिनकर के काव्य में मानवतावादी बोध समाजबोध का चरम उत्कर्ष 7. उपसंहार । परिशिष्ट ।

265. सुरैया

साठोत्तरी हिन्दी नाटक और अस्तित्ववाद।

निर्देशिका : डॉ. माधुरी सुबोध

Th 16696

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में अस्तित्ववादी दार्शनिकों की अस्तित्व संबंधी प्रपत्तियों के सर्वेक्षण

से उपलब्ध तथ्यों के आधार पर साठोत्तरी हिन्दी नाटकों में अस्तित्ववाद का अन्वेषण किया गया है । अस्तित्ववाद की पृष्ठभूमि, अर्थ एवं परिभषा, दार्शनिक विश्लेषण, उत्तरदायी परिस्थितियां, पारिभाषिक पद एवं अर्थ संदर्भ, पाश्चात्य साहित्य में अस्तित्ववाद का विवेचन किया गया है । प्राचीन भारतीय दर्शन और अस्तित्ववाद, आधुनिक भारतीय चिंतन और अस्तित्ववाद, भारत में अस्तित्ववाद के लिए उत्तरदायी परिस्थितियां, भारतीय हिन्दी साहित्य में अस्तित्वादी चेतना का प्रस्फुरण और उत्कर्ष का वर्णन किया गया है । भारतेंदु युग, प्रसाद युग तथा प्रसादोत्तर युग के प्रमुख नाटकों में अस्तित्ववादी प्रवृत्तियों का विवेचन किया गया है । साठोत्तरी हिन्दी नाटकों के कथानक में अस्तित्ववादी चेतना का वर्णन तथा विशिष्ट नाटकों में अस्तित्ववादी वस्तु की संकल्पना, अस्तित्ववाद की प्रवृत्तियों के अन्तर्गत विशिष्ट हिन्दी नाटकों में अस्तित्ववाद का अन्वेषण किया गया है । ऐतिहासिक, राजनीतिक चरित्र, ऐतिहासिक धार्मिक-मिथकीय चरित्र, सामजिक (वैयक्तिक) चरित्र, सामाजिक (वर्गगत) चरित्र, असंगतनाट्य चरित्र और अस्तित्ववाद का विवेचन किया गया है। अस्तित्ववादी सौन्दर्य शास्त्र का संक्षिप्त विवेचन, साठोत्तरी हिन्दी नाटकों में भाषा नाट्य, प्रतीक, बिंब, फैंटेसी, व्यंग्य, रंग-संकेत आदि का विवेचन किया गया है ।

विषय सूची

1. अस्तित्ववाद अर्थ विश्लेषण एवं स्वरूप 2. अस्तित्ववाद : भारतीय जीवन-दर्शन, चिंतन और साहित्य 3. छठे दशक के पूर्व के नाटकों में अस्तित्ववादी चेतना 4. साठोत्तरी हिन्दी नाटकों के संवेदन-पक्ष पर अस्तित्ववादी चेतना का प्रभाव 5. साठोत्तरी हिन्दी नाटकों में चरित्र-संरचना और अस्तित्ववादी चेतना 6. साठोत्तरी नाट्य-शिल्प और अस्तित्ववादी चेतना 7. उपसंहार । परिशिष्ट ।

M.Phil Dissertations

266. काम्बले (अनिल)

फैशन फिल्म में स्त्रीवादी मीडिया दृष्टि ।

निर्देशिका : डॉ. सुधा सिंह

267. गीता देवी

वैश्विक औद्योगिक व्यवस्था और विकल्प की संभावना : धार के संदर्भ में ।

निर्देशक : प्रो. हरिमोहन शर्मा

268. गीता रानी

सुरंग में सुबह (मिथिलेश्वर) में राजनीतिक चेतना ।

निर्देशक : डॉ. कृष्णदत्त शर्मा

269. गुप्ता (सुमन)

आतंकवाद की समस्या और जिंदा मुहावरे ।

निर्देशिका : प्रो. (श्रीमती) प्रेम सिंह

270. प्रसाद (सत्यदेव)

विस्थापन की समस्या और मीराकांत का नाटक काली बर्फ़ ।

निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

271. पाठक (निखिलेश कुमार)

असाध्यवीणा का शैलीवैज्ञानिक विश्लेषण ।

निर्देशक : प्रो. मोहन

272. बर्णवाल (मुकेश कुमार)

नर-नारी में नौटंकी शैली ।

निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

273. भावना

चित्तौड़ की रानी पद्मिनी का जौहर धारावाहिक की सांस्कृतिक निर्मितियां।

निर्देशिका : डॉ. सुधा सिंह

274. मनोज कुमार

मोहनदास का संरचनावादी अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. अपूर्वानंद

275. मीणा (पूजा कुमारी)
कवि रसलीन का सामाजिक बोध ।
निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

276. मुकेश कुमार
बालकृष्ण भट्ट के निबंधों में राष्ट्र ।
निर्देशक : प्रो. सुधीश पचौरी

277. मो. ज़फ़र इकबाल
नवजागरण के संदर्भ में हाली का 'मुसद्दस' और मैथिलीशरण गुप्त के 'भारत भारती' का तुलनात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : प्रो. हरिमोहन शर्मा

278. यादव (अनिल कुमार)
'हंसा जाई अकेला' में आज़ादी के बाद का भारत ।
निर्देशिका : डॉ. कुमुद शर्मा

279. यादव (शरद)
परंपरा का मूल्यांकन में रामविलास शर्मा की समीक्षा-दृष्टि ।
निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

280. यादव (सुशील कुमार)
मैं बोरिशाइल्ला (महुआ माजी) में भाषायी राष्ट्रवाद की समस्या ।
निर्देशक : डॉ. तेज सिंह

281. योगेन्द कुमार
एक नौकरानी की डायरी का मनोविश्लेषणवादी अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. पूरनचंद टण्डन

282. रंजीत कुमार
ज़ीरो रोड में प्रवसन (माइग्रेशन) की समस्या ।
निर्देशक : डॉ. अपूर्वानंद

283. रीता

उदयप्रकाश की कहानियों में सत्ता-विमर्श।

निर्देशिका : श्रीमती स्नेहलता

284. रोहित कुमार

काशीनाथ सिंह की कथा-भाषा (संदर्भ : 'काशी का अस्सी' और 'रेहन पर रग्घु')।

निर्देशक : प्रो. मोहन

285. विक्रम कुमार

दलित दृष्टि के संदर्भ में 'बस बहुत हो चुका' और 'कब होगी वो भोर' का तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : श्रीमती स्नेहलता

286. विकास निर्मल

'यही सच है' कहानी और 'रजनीगंधा' फिल्म : पाठ और तकनीक का तुलनात्मक अध्ययन ।

निर्देशिका : डॉ. कुमुद शर्मा

287. शर्मा (प्रेरणा)

'आकाशचंपा' में व्यक्ति और समाज का यथार्थ ।

निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

288. शर्मा (मोना)

लोकजागरण की दृष्टि से दादूदयाल काव्य का मूल्यांकन।

निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

289. सहरावत (रंजना)

संस्मरण विधा के संदर्भ में काशीनाथ सिंह के याद हो कि न याद हो का अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. पूरनचंद टण्डन

290. सिंह (ज्ञानेन्द्र कुमार)
नई कहानी आंदोलन और देवीशंकर अवस्थी की आलोचना-दृष्टि ।
निर्देशिका : प्रो. (श्रीमती) प्रेम सिंह

291. सीमा कुमारी
रहीम के काव्य में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ ।
निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

292. सुनील कुमार
हंस का मीडिया विशेषांक और मीडिया का यथार्थ।
निर्देशक : प्रो. सुधीश पचौरी